॥ श्री हनुमते नमः ॥

श्री बजरंग बाण अर्थ सहित

पाठ: एक छपी पुस्तिका के अनुसार · अर्थ: hanumanchalisapdf.in

॥ दोहा ॥

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करैं सनमान।
तेहि के कारज सकल सुभ, सिद्ध करैं हनुमान॥

अर्थ: जो पक्के प्रेम और विश्वास के साथ, आदर से विनती करते हैं, उनके सब शुभ काम हनुमान जी पूरे करते हैं।

॥ चौपाई ॥

१ जय हनुमंत संत हितकारी।
सुन लीजै प्रभु अरज हमारी॥

अर्थ: संतों का भला करने वाले हनुमान जी, आपकी जय हो। हे प्रभु, हमारी विनती सुन लीजिए।

२ जन के काज विलंब न कीजै।
आतुर दौरि महा सुख दीजै॥

अर्थ: अपने भक्त का काम करने में देर न कीजिए। जल्दी दौड़कर आइए और बड़ा सुख दीजिए।

३ जैसे कूदि सिंधु महिपारा।
सुरसा बदन पैठि विस्तारा॥

अर्थ: जैसे आप कूदकर समुद्र के पार चले गए, और सुरसा के फैलते मुँह में भी प्रवेश कर गए।

४ आगे जाय लंकिनी रोका।
मारेहु लात गई सुर लोका॥

अर्थ: आगे जाने पर लंकिनी ने आपको रोका। आपने उसे एक लात मारी, और वह देवताओं के लोक चली गई।

५ जाय विभीषन को सुख दीन्हा।
सीता निरखि परमपद लीन्हा॥

अर्थ: आपने जाकर विभीषण जी को सुख दिया, और सीता जी के दर्शन करके परम पद (सबसे ऊँचा आनंद) पाया।

६ बाग उजारि सिंधु महं बोरा।
अति आतुर जमकातर तोरा॥

अर्थ: आपने रावण का बाग उजाड़कर समुद्र में डुबो दिया, और बड़ी तेज़ी से यमराज की कटार भी तोड़ दी।

७ अक्षय कुमार को मारि संहारा।
लूम लपेट लंक को जारा॥

अर्थ: आपने अक्षय कुमार को मार डाला, और अपनी पूँछ लपेटकर लंका जला दी।

८ लाह समान लंक जरि गई।
जय जय धुनि सुरपुर में भई॥

अर्थ: लंका लाख की तरह जल गई, और देवताओं के लोक में जय-जयकार होने लगी।

९ अब विलंब केहि कारन स्वामी।
कृपा करहु उर अंतर्यामी॥

अर्थ: हे स्वामी, अब देर किस कारण से है? हे सबके मन की बात जानने वाले, कृपा कीजिए।

१० जय जय लखन प्राण के दाता।
आतुर होय दुःख करहु निपाता॥
अर्थ: लक्ष्मण जी को प्राण देने वाले, आपकी जय हो, जय हो। जल्दी आकर दुःख का नाश कीजिए।

११ जै गिरिधर जै जै सुख सागर।
सुर समूह समरथ भटनागर॥
अर्थ: पर्वत उठाने वाले, आपकी जय हो। सुख के सागर, आपकी जय हो। आप सब देवताओं में समर्थ हैं और वीरों में श्रेष्ठ हैं।

१२ ॐ हनु हनु हनु हनुमंत हठीले।
बैरिहि मारु बज्र की कीले॥
अर्थ: ॐ, हे अपनी बात पर अटल हनुमान जी, मारिए, मारिए, मारिए। वज्र जैसी कील से शत्रु को मारिए।

१३ गदा बज्र लै बैरिहिं मारो।
महाराज प्रभु दास उबारो॥
अर्थ: गदा और वज्र लेकर शत्रुओं को मारिए। हे महाराज, हे प्रभु, अपने दास को बचाइए।

१४ ॐ कार हुंकार महाप्रभु धावो।
बज्र गदा हनु विलंब न लावो॥
अर्थ: हे महाप्रभु, ॐकार और हुंकार करते हुए दौड़कर आइए। वज्र और गदा से मारिए, देर न लगाइए।

१५ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीसा।
ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर सीसा॥
अर्थ: ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं, हे वानरों के स्वामी हनुमान जी। ॐ हुं हुं हुं, शत्रु के हृदय और सिर पर प्रहार कीजिए।

१६ सत्य होहु हरि शपथ पायके।
राम दूत धरु मारु जाय के॥
अर्थ: श्रीहरि (श्रीराम) की शपथ से बँधे आप अपना वचन सच कीजिए। हे राम के दूत, जाकर शत्रु को पकड़िए और मारिए।

१७ जय जय जय हनुमंत अगाधा।
दुःख पावत जन केहि अपराधा॥
अर्थ: हे हनुमान जी, जिनकी शक्ति की कोई थाह नहीं, आपकी जय हो, जय हो, जय हो। आपका भक्त किस अपराध के कारण दुःख पा रहा है?

१८ पूजा जप तप नेम अचारा।
नहिं जानत हौं दास तुम्हारा॥
अर्थ: पूजा, जप, तप, नियम और आचार, मैं इनमें से कुछ नहीं जानता। मैं तो आपका दास हूँ।

१९ वन उपवन मग गिरि गृह माहीं।
तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं॥
अर्थ: वन में, बगीचे में, रास्ते में, पहाड़ पर या घर में, आपके बल के सहारे हम कहीं नहीं डरते।

२० पांय परौं कर जोरि मनावौं।
येहि अवसर अब केहि गोहरावौं॥
अर्थ: मैं आपके पैरों पड़ता हूँ और हाथ जोड़कर मनाता हूँ। इस समय मैं और किसे पुकारूँ?

२१ जय अंजनि कुमार बलवंता।
शंकर सुवन वीर हनुमंता॥
अर्थ: हे अंजनी के बलवान पुत्र, आपकी जय हो। आप भगवान शंकर के अंश, वीर हनुमान जी हैं।

२२ बदन कराल काल कुल घालक।
राम सहाय सदा प्रतिपालक॥
अर्थ: आपका रूप भयानक है, आप काल के कुल का भी नाश करते हैं। आप श्रीराम के सहायक हैं और सदा भक्तों की रक्षा करते हैं।

२३ भूत, प्रेत, पिशाच निशाचर।
अग्नि बेताल काल मारी मर॥
अर्थ: भूत, प्रेत, पिशाच, निशाचर (रात में घूमने वाले राक्षस), अग्नि बेताल, काल और मारी (महामारी): अगली चौपाई इन्हीं को मारने की विनती करती है।

२४ इन्हें मारु, तोहि शपथ राम की।
राखउ नाथ मरजाद नाम की॥
अर्थ: इन्हें मारिए, आपको श्रीराम की शपथ है। हे नाथ, अपने नाम की मर्यादा रखिए।

२५ जनकसुता हरि दास कहावो।
ताकी शपथ विलंब न लावो॥
अर्थ: आप जनक जी की पुत्री सीता जी और श्रीहरि के दास कहलाते हैं। उनकी शपथ है, देर न लगाइए।

२६ जै जै जै धुनि होत अकासा।
सुमिरत होत दुसह दुःख नासा॥
अर्थ: आकाश में जय-जयकार गूँज रही है। आपका स्मरण करते ही असहनीय दुःख का भी नाश हो जाता है।

२७ चरण शरण कर जोरि मनावौं।
यहि अवसर अब केहि गोहरावौं॥
अर्थ: आपके चरणों की शरण में हाथ जोड़कर मनाता हूँ। इस समय मैं और किसे पुकारूँ?

२८ उठु उठु चलु तोहि राम दुहाई।
पांय परौं कर जोरि मनाई॥
अर्थ: उठिए, उठिए, चलिए, आपको श्रीराम की दुहाई है। मैं पैरों पड़कर और हाथ जोड़कर मनाता हूँ।

२९ ॐ चं चं चं चपल चलंता।
ॐ हनु हनु हनु हनुमंता॥
अर्थ: ॐ चं चं चं, हे तेज़ी से चलने वाले हनुमान जी। ॐ, मारिए, मारिए, मारिए, मारिए, हे हनुमान जी।

३० ॐ हं हं हांक देत कपि चंचल।
ॐ सं सं सहमि पराने खल दल॥
अर्थ: ॐ हं हं, चंचल वानर हनुमान जी ललकारते हैं। ॐ सं सं, दुष्टों की सेना डरकर भाग जाती है।

३१ अपने जन को तुरत उबारो।
सुमिरत होय आनंद हमारो॥
अर्थ: अपने भक्त को तुरंत बचाइए। आपका स्मरण करते ही हमें आनंद हो।

३२ यह बजरंग बाण जेहि मारै।
ताहि कहो फिर कौन उबारै॥

अर्थ: यह बजरंग बाण जिसे मारे, कहिए, फिर उसे कौन बचा सकता है?

३३ पाठ करै बजरंग बाण की।
हनुमत रक्षा करै प्राण की॥

अर्थ: जो बजरंग बाण का पाठ करता है, हनुमान जी उसके प्राणों की रक्षा करते हैं।

३४ यह बजरंग बाण जो जापै।
ताते भूत-प्रेत सब कांपै॥

अर्थ: जो इस बजरंग बाण का जाप करता है, उससे सब भूत-प्रेत काँपते हैं।

३५ धूप देय अरु जपै हमेशा।
ताके तन नहिं रहै कलेशा॥

अर्थ: जो धूप देकर सदा इसका जाप करता है, उसके शरीर में कोई कष्ट नहीं रहता।

॥ दोहा ॥

प्रेम प्रतीतिहि कपि भजै, सदा धरै उर ध्यान।
तेहि के कारज सकल सुभ, सिद्ध करैं हनुमान॥

अर्थ: जो प्रेम और विश्वास से हनुमान जी को भजता है और सदा हृदय में उनका ध्यान रखता है, उसके सब शुभ काम हनुमान जी पूरे करते हैं।